

अतिक्रमण वरिधी अभियान के खिलाफ मज़दूरों की रैली

चर्चा में क्यों?

तलाड़ी आंदोलन की 92वीं वर्षगांठ मनाने के लिये गांधी पार्क में एक बड़ी सार्वजनिक रैली आयोजित की गई। इसमें दैनिक वेतन भोगी और सामाजिक संगठनों के सदस्य शामिल थे, जो नगर नकियों द्वारा शुरू की गई अतिक्रमण वरिधी गतिविधियों के खिलाफ वरिधी प्रदर्शन कर रहे थे।

मुख्य बदि:

- यह अभियान रसिपना नदी के बाढ़ के मैदानों से अवैध संरचनाओं को हटाने के लिये राष्ट्रीय हरति अधिकरण के निर्देशों के अनुपालन में चलाया जा रहा है।
- नगर नगिम आयुक्त द्वारा इस बात पर सहमति जताए जाने के बावजूद कनिवास के प्रमाण के रूप में किसी भी वैध पहचान-पत्र का उपयोग किया जा सकता है, मसूरी देहरादून विकास प्राधिकरण (MDDA) द्वारा दस्तावेजों को अस्वीकार कर दिया गया था।
- प्रदर्शनकारी ने इन अस्वीकृतियों को चुनौती देने और अपने परिवारों को बेदखल होने से बचाने के लिये दिये गए समय की कमी पर प्रकाश डाला।

तलाड़ी आंदोलन

- 30 मई, 1930 को टहिरी गढ़वाल राज्य की वन नीति के खिलाफ तलाड़ी में एक महत्त्वपूर्ण सत्याग्रह हुआ, जो उत्तराखंड के बाकी हिस्सों में अंग्रेजों द्वारा लागू की गई नीतियों से मलिता-जुलता था।
- जब टहिरी के महाराजा यूरोप में थे, तब उनके प्रधानमंत्री चक्रधर जुयाल ने जलियाँवाला बाग त्रासदी की याद दलाते हुए तलाड़ी आंदोलन को कसूरता से दबा दिया था।
- सैनिकों ने बच्चों सहित नहित्थे लोगों को गोलियों से भून दिया और भागने की कोशिश करते हुए कई लोग यमुना नदी में डूबकर मर गए।